

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: इस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

०।१२७ (८८०)

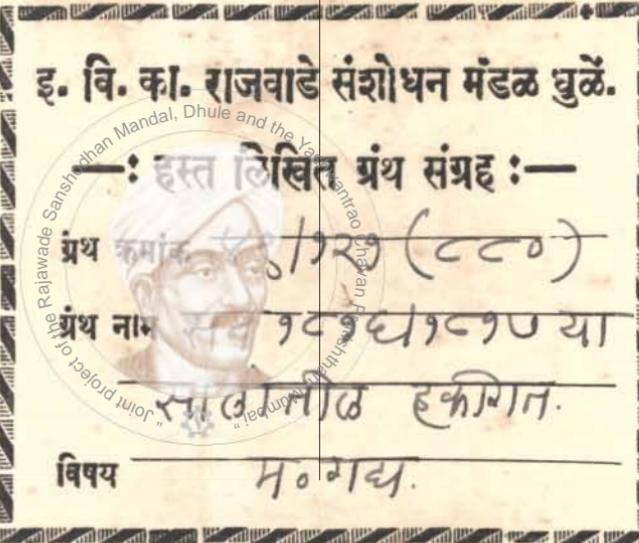
ग्रंथ नाम

वृत्तिशास्त्र या

राजवाडे हस्ताग्रंथ.

विषय

म० गद्य.



वि. का. राजवाडे

१९२९



६८६४६ संग्रहालय

हकीकत

ठापलेली खंड ४ था

29
monday

• ३४७ उत्तराधारा अनुवाद विजय

—અટુસદાતેસુધ્રામીઠાં ૨૨૮ કાન્દો = ૭૩

ରାମଟାନ୍ତରିକାରାଜପଦବୀ

६ अमरपत्नी द्वारा दलघत लिखा

ମୁଖ୍ୟାତ୍ୟାପନରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତପ୍ରକାଶନରେ

၁၁၁

ଶ୍ରୀମତୀ-ରାଜମହାନାଥ କରିବାରେ

କେବାରିମନ୍ଦିରାଗରେ ଫୁଲେ ଗତିପଦ୍ଧତି

तरवायां अस्ति तदा मृत्युं जाय

ପରମାତ୍ମାବିନ୍ଦୁରମହାତ୍ମା

Mandal, Dhule and the Y

le Sanshi
Le Samshe
Le Samsho
Le Samsho

18118-51021
Rancho San Pedro

~~Project 12~~ ~~Lesson 12~~ ~~Lesson 12~~ ~~Lesson 12~~

1528 MARCH 23 1962

~~100~~ - 1 - 1

૧૦૮૭૧૧૭ વર્ષાં અધ્યક્ષમાનાનુભવ

ଅଣୁତେମନିକିରଣ ପାଠସାହ୍ୟ

त्रियम्बन्नेऽग्ना गदामित्रमेवैति,

तथेषाचाचाच्यवा॥६७४॥

१३०५, नवंबर १९८४

ଶ୍ରୀକୃତ୍ସମ୍ବନ୍ଧାବ୍ସାଦିତାରେ

ବନ୍ଦବତ୍ରିଲାଭିକଳାକାଶମୌଳୀ ଉପରେ ପାଇଲା

ପ୍ରାଚୀନ୍ୟରାଜସ୍ତରେ ଛନ୍ଦ ମରାଜିଲି

~~22-20102~~

ग्रन्थालयामृतसंकलनम्

କରିବାକୁ ପଦେତାହୁ ଧରାଯାଇଲା



କୁତୁହାଳିରୀରେବନମର୍ଦ୍ଦିଯମ

प्रियं अनुभव देव न ते उम्मीदि न विषया

ଲାଭବନ୍ଦେଶ୍ୱରପ୍ରତିଷ୍ଠାନ

~~पुरातो यति पर्यालं अंगि उत्तेष्ठते~~

रुद्रेन्द्रलोक्यं चैषज्ञकीयस्त्वयच्छाम

~~महात्मा गांधी~~

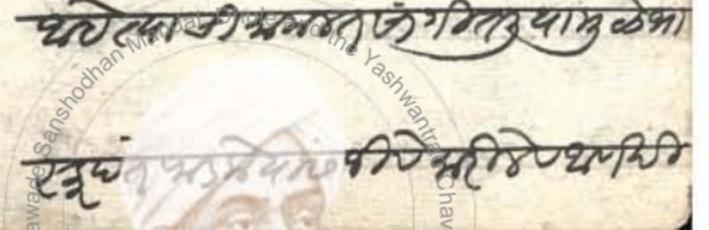
2. 2. 12. 12.

ଦ୍ୟାନିଷ୍ଠକୁରୁ କୁରୁଶ୍ଵରମତିପରମାତ୍ମା

ମହାତ୍ମାରାଜୀଙ୍କରିବୁନାମାତିଗିରେ

એ પતેં બારાં અન્યદે વાત

— 2 —



Rajiv
an English

Project Gutenberg Australia

~~44~~

၁၈၁၂

तथा गग्नावारं शुलभमहम् ४

એકીકરિતાનુભવિત્તિનાનુભવે

दृष्टिप्रवाहयोग्यम् तेऽसम्भवम्

ج

Digitized by srujanika@gmail.com

અને પુણ્ય વિરામ મજૂરી કરી રહેતું હૈ

ରାଜତକ୍ଷେତ୍ର ପରିମିଳିଗା ଯାହାକୁ ଦେଖିଲୁ

श्रीमद्भागवतस्मिन्द्वये अस्यां श्रुते

Digitized by srujanika@gmail.com

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ଆମିହାଙ୍କ ଏହାକିମ୍ବାନ୍ତିରେ ଯାଇଲୁ

॥ श्री अमृतगंगा नाम सर्वदा देवताय विजय

दांरी राजा लोचनो उत्तीष्ठेन प्रभो

ଦ୍ଵିତୀୟ ଉତ୍ସମରଣାରୁ ଅନୁଭାବିତ.

नीरामी अग्नि वर्ण लेख शिष्टाचलम्

3A

ज्ञेयस्त्रियुक्ताप्रमाणप्रयोगोरत्वात्

दमति उक्त गांडू दमति

महाराष्ट्रीयमन्त्रियराज्यकाले देश

गांत्रिम्भृत्युपारम्भस्त्रिवृग्नांस्येद्य

38

याउद्यव्यवस्थेत्विभृत्यव्यवस्थायमि

୨ ପ୍ରସାଦେଖାରୀଙ୍କୁ ଉପରେ

Mandal, Dhule and the

de Sansho
wantrao

A portrait of a man with a mustache, wearing a turban and a robe, holding a book. The portrait is framed by a decorative border. The name "Rajawali" is written vertically along the left edge of the frame.

Digitized by srujanika@gmail.com

କୁଣ୍ଡଳ ପାତାରେ ଯାଏନ୍ତିରେ ଜିମ୍ବାଲ "join" ହେଉଥାଏ

यात्रेष्वाद्युपर्युक्ते भिन्ना उद्देश्यान्वयने दृष्टिक

ରାଜୀଶ୍ଵର ମହାଦେବ

~~સુરતાંત્રયોજનાથ~~

10

W. H. C. 1870

卷之三

३०५

४०९३७८८०१३८१३८८८०११

18
18

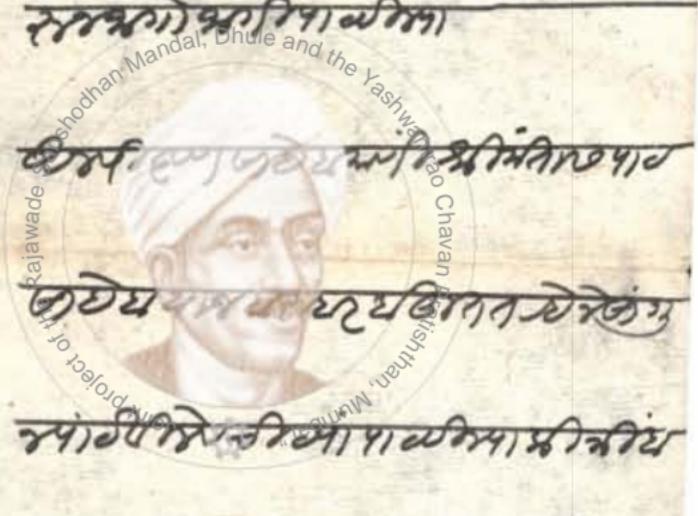
2

(4) ६
हामेत्तु चिन्हं द्वे कर्त्तव्यं भी
की हिंसां तेजो मित्रां वासुदेवां
नासदां रात्रि गत्वा तु

६ ६
केवल इच्छा ते पवर्त्तते प्रभवे
यद्युत्तमं भवते भवते भवते
मतां तज्जन्म भवते भवते भवते
वासदेशं तज्जन्म भवते भवते

६ ६
ठगिल्ले उत्तमं भवते भवते भवते
द्वितीय वासदेशं भवते भवते

सुराम्बोध गिराविना



प्रभवते भवते भवते भवते भवते

उत्तमं भवते भवते भवते भवते

प्रभवते भवते भवते भवते भवते

विकल्पं भवते भवते भवते भवते

भवते भवते भवते भवते भवते

मात्रां विकल्पं भवते भवते भवते

द्वितीय वासदेशं भवते भवते

रात्रि वासदेशं भवते भवते

द्वितीय वासदेशं भवते भवते

६३
अमाद्युपत्तेवीर्णकुमारिकुमारी

स्त्रीलिंगोऽनीतिकुमारीकामयाद्यो

ज्ञेयकुमारीविविज्ञानांश्चिन्ता

अनुधनमारोद्येत्प्रेषण्डिलेगिते

श्रीमंतांस्त्रीलिंगमार्गात्प्रविष्टिकाम

चाप्याद्येत्प्रविष्टिकाम

चेत्त्राहरन्नेष्टावेनावेशम्॥ उमा

नहिंचलुभविष्टिकामवेष्टिकाम

चापाध्यायुषिवासातःकुमारीकाम

कामित्तुगोप्यप्रविष्टिकामवेष्टिकाम

उमासामिपत्त्वराधेष्टिकाम

स्त्रीलिंगेष्टिकामविष्टिकाम

ସମ୍ବଲପିତାଙ୍କ ଦେଖିବାରୁ ଆଶିଷ ଦେଇଲାଗଲା

याउद्युक्तविजयतापाविहेदामृषी

ମତ୍ରାଶିଖିପାଦକରିତାନୁଷ୍ଠାନକାରୀ

ପାତ୍ରମାନକାଳୀରୁଦ୍ଧିତାରେ ପାତ୍ରମାନଙ୍କରୁ

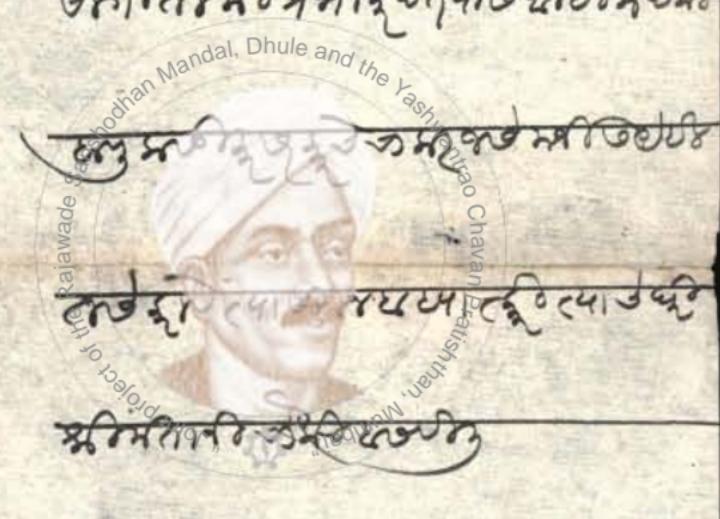
— ३ —

~~200-300~~

~~प्राप्ति विद्युति विद्युति विद्युति विद्युति विद्युति~~

~~.....~~ अन्तिम लेखक का विवर

~~प्राप्ति विद्या के अधीन~~



དୁਆ རྒྱତ୍ୱ གྲୁଣ୍ଣ ཉତ୍ସବ དିନ୍ଦା ପରିମାଣ

ବର୍ଣ୍ଣାକାଳୀରୁହିଲାଏଇପାଇଲା

३

କାନ୍ତିରୁଦ୍ଧିରୁ ପାଇଁ ମହାଶୂନ୍ୟରୁ ପାଇଁ

ANSWER

وَالْمُؤْمِنُونَ

藏文題跋

卷之三

དྲାଘକୁ ଦେଖିବାରେ ମନ୍ତ୍ରାବ୍ୟାହାରରେ

(8)

तमैरुद्धुर्गोपेयां च अस्तु इष्टं निति ॥

उद्धुर्गोपेयां निति वित्तां विद्युत् ॥

वित्तां विद्युत् वित्तां विद्युत् ॥

ज्ञानैरुद्धुर्गोपेयां निति ॥

विद्युत् वित्तां विद्युत् ॥

उद्धुर्गोपेयां निति ॥

विद्युत् वित्तां विद्युत् ॥

ପ୍ରେସାଟ୍ୟ ରହିଥିଲା ଯେମନଙ୍କରୁ

ଅତ୍ୟାଷମେତ୍ରରେ ଗ୍ରେହିଲା-ରମ୍ପଣୀ

દ્વારા હજુ અને તુલાધરો મિશ્રનાં પ્રદેશી

ମୁହଁରାତିରେ ମୁହଁରାତିରେ ମୁହଁରାତିରେ

卷之三

卷之三

etiam in primis etiam in primis

卷之三

vol. Phyle

Sanshodha
ashwantra

A portrait of a man with a prominent mustache and a white turban, looking slightly to the right. The portrait is set within a decorative frame.

Joint Project
then, Member

~~प्राप्ति विवरण अनुसार~~

~~2000~~

६ राजा विक्रम की अपलब्धि

ପାଦମୁଖ କରିବାକୁ ପାଦମୁଖ କରିବାକୁ

द्युमिति द्युमिति द्युमिति

द्रव्यमात्रेता उपर्युक्तं प्रतिष्ठानं

ପାଦତେଜଶିଖିକୀରଣାନ୍ତ

କଣ୍ଠରୀତିହେମାଲୀଶ୍ଵର

۲۷

કે ચારી જ્ઞાન રે વિજ્ઞાન હોય

मन्त्रिष्ठेषु विषयोऽस्मात् गृह्णान्ति अमत

ચુદ્રમણ અરાધેનું હરોચુદ્રમણ

ऐश्वर्याद्यमत्याहमन्तं

—**धर्मापादित्यवच्छेष्टारम्**

तात्पर्यम् ।

~~प्राप्ति विद्या विद्या विद्या विद्या~~

~~2010-2011~~

संघर्षप्रयोगकालसमिति

यमाद्युष्मापित्याहेष्टाएल्लील

એવી યારીની અનુભૂતિ હશે

४१७८८ यात्रा विश्वासी राजनीतिकाल

२४५ चारी दिल्ली चारी दिल्ली

३ अस्ति विष्णु विष्णु विष्णु

"Joint pro-
Mumbai."

ପାତ୍ରମୁଖ ଲିପିକାଳି

~~1822~~

192

~~प्राप्ति विभाग~~

~~ଅଭିନବାଳ୍ମୀକିରଣ~~

ରୁଧିଶ୍ଵରମନ୍ଦିର

କରାନ୍ତିରେ ଅନ୍ତରୀଳରେ ଉପରେ

ତାମିତ୍ୟାବ୍ଦୀ ଯତନମନ୍ତରେ ଜ୍ଞାନାଂଶୁ

येति इति अविष्टुम् वा उत्तीर्ण एवं विद्या

କୁର୍ମାନ୍ତିକାଣିଷ୍ଠାନିଷ୍ଠାନିଷ୍ଠାନିଷ୍ଠାନିଷ୍ଠାନିଷ୍ଠା

କୁର୍ମାନ୍ତିରିଷ୍ଟବୁଶ୍ରମିତାପରିହାରିଗମ

A circular watermark is centered over the image. It features a portrait of a man with a tilak on his forehead. Around the portrait, the text "राजवाडे चावलिशन मुम्बई" (Rajawade Chawla Shilan Mumbai) is written twice in Devanagari script. Below the portrait, the text "संस्कृत एवं लोक साहित्य का अधिकारी" (Administrator of Sanskrit and Folk Literature) is written once. The watermark is semi-transparent and has a decorative floral border.

राधारुद्गमनं तदनुषिद्धत्वा
प्रवृत्तये तातिरिक्षम् अथवा
असांतिरिक्षम् असांतिरिक्षम्

३ एष उत्तरायनसारांश्यमारपेत्तु
तुष्टिष्ठेद्येष्वेभवेण्ट्वमनेत्तु
चाप्तार्थ्यं अभिज्ञनराजिष्ठाय

येऽन्नायप्रतिष्ठामस्तु उत्तिष्ठामन्तरी
कृष्णमहर्विद्याभाष्टिकं शुभमुद्गम्पति
उम्भरितविद्युश्चिरात्माप्रथमरामिस
उपाधेष्ठेष्ठित्वात्यात्येष्ठित्वियो

द्वीपसिंहायेन जट्टुल्लम्भयोग्यत्प्राप्ता

ରୁପାତ୍ମିକାରୁଦ୍ଧାରିଶବ୍ଦାତ୍ମକାରୁଦ୍ଧାରି

ପାତ୍ରକାଳୀମାଟିଆମାନିଜୁଗହେଚାଲ

ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੇ ਸਾਡੇ ਅਤੇ ਕੁਮਾਰੀ

୪ ଏତିତାରିଖମ୍ବାତତନାମକାଳୀମ

ରାଜ୍ୟକାରୀମନ୍ଦରାଜ୍ୟମନ୍ତ୍ରେଷ୍ଟିକ୍

କରୁଥିଲାମାତିକିଯନ୍ତିମ

ଶ୍ରୀମତୀ ପରିବାରଙ୍କ ଲେଖନ

—**छन्दोदारणामहिन्द्रयज्ञलभुतेस्त**

एवादीन्द्रियाभिन्नताम् एवादीन्द्रियाभिन्नताम्

~~छृद्दरोप्तद्वेष्यमामामि~~

~~राज्यपाल विधायक सभा~~

~~2012-2013~~ 2013-2014
Marble Arch and the

Yashwantrao

१८ अप्रैल १९४७ : उत्तराखण्ड में

३५४ अर्थात् इन्द्रियोऽपि विश्वामीति

ज्ञानाद्युपासनामृतमिन्द्रसंविधिना

କୁମରାବ୍ଦୀନାଥେ ପିତାମହୀର

मात्राप्राप्तिरुपादानं विशेषं

रायाधेष्टोषेऽप्युत्तमविनिमयाद

रामदेवमध्येष्ठानोमर्युष्मितीपक्ष

~~स्वास्थ्यम् अविलम्बं विद्यते यज्ञः~~

१०८

ତୁମ୍ହାରୀରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା

मरणिन्द्रपञ्चाण्डुक्तिमृद्युमण्डित

ରାଜ୍ୟକାନ୍ତରେ ମହାନାନ୍ଦିରୀ ପାଇଲା

मात्रेगिरज्जयारम्भेऽरकुमरीगर

रायजिनिभवारम्भपेत्याम्भयोऽद्वयः

ପ୍ରକାଶନିକାରେ ଅମ୍ବଲାବାଜାଳ

८ एउटाकामनारेखातीर्तिरेहा।

ପ୍ରାଚୀନ ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଗ୍ରନ୍ଥରେ

ଉଠୁଣ୍ଡିବ୍ୟାଗିନୀଏକ୍ସଲ୍ୟୁମନ୍

ଶ୍ରୀକୃତ୍ସନ୍ଦରାମାଜ୍ୟାମଣି

ଶେଷାଖାରେ କୋଣାର୍କ ମହିଳାଙ୍ଗନ

ପ୍ରଥମ ପାତା

अग्रस्तिं गायत्री नृषुप्ता प्रसंग

यस्तद्वायमाचीत्येष्टाज
n Mandal, Dhule and the Yas

४८४ अस्त्र विद्युतीया इवान्नम्
Anurao Chaitanya

महायानप्राचीन

83-11128-A-48
"J. O. M. " "Number 1"

શાહમાનુદી કૃપાયાનુદી

ਤੇਜਥਨੇ ਅਮਿਤ ਹੋਣ ਕਰ ਰਾਹ ਰਾਵ ਪਾ

ପାଞ୍ଚମୀ ପରିଷାମେ କଥାରୁ ଲାଗିଥାଏ

ମୁହଁରାମର୍ଜନିଷ୍ଠେତପ୍ରମିଳାଯକ୍

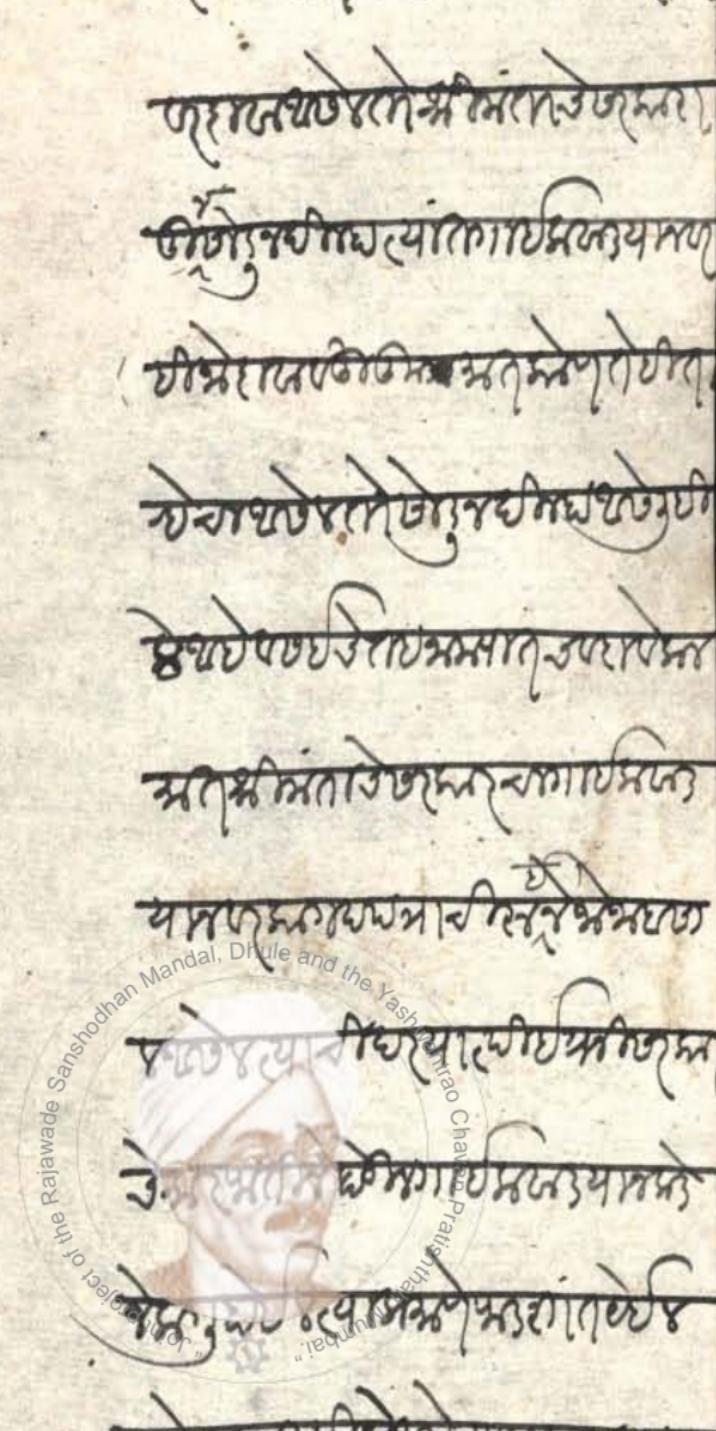
ପାଦମ୍ବରାତ୍ରିକାନ୍ତିକାଳେ

યારે દુર્ઘટના ગીત થાયા રહ્યા હતી

କୁର୍ମାପାତାନୀଶ୍ଵରୀଗ୍ରାମପାଦିଗାମ

१५४

~~କାନ୍ତିରାମର ଉଦ୍‌ଘାଟନା~~



۹۷

ରାଜତାରୀଙ୍କମରୀ

४ पुष्ट्यात्मकमित्रात्मकमित्रात्मक

ખાતું ચેપાયાની મરામણિલા

କେଣପାଞ୍ଚମୀତୁମ୍ବରାଯତ୍

~~पात्रम् विभृत्या तदेव विभृत्या तीज~~

पहाड़ा गुलामी प्रभावित

४३५

~~सर्वानन्द~~

एतद्वायामाद्युष्टेस्त्रैपृथग्नाम

उरुम्बेश्वरीमध्यात्मिका

४८८ निर्वाचनीयता के बाबत यह

राजस्थान विधान सभा गठनारूप
On March 1st and the 1st

Chouhan P.

Digitized by srujan, IITB
Project

¶

ज्ञानमित्रीयाप्यवाहनाणा^{मूर्ख}

त्यात्रेषोमिवाउच्चमहाद्वारा

यात्रिग्रीष्मावाहन्तुम् यत्प्र

મુલુકાણથાની માટે તો ચમેરાજાની

ताहाकिं ज्ञातमनुष्टुप्पदा

ରାଧାକୃଷ୍ଣତ୍ୟମୁଲମ୍ବନମିଳନ

~~କୁଳରାଜମହାରାଜ୍ୟାଧିକାରୀ~~

सत्त्वाद्योपलक्ष्मीरुद्रित्यपेत्तेचन

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତପ୍ରଥମାଦୟ

ପ୍ରମାଣିତ କାହାର ଦେଖିଲା

গুরুত্বপূর্ণ

उद्दिष्टानिषेदोऽनिष्टयष्टेऽप्य

અમારી જ્ઞાન ઉપજાત મળે હોય

ପାତାରେ କରିବାକୁ ପାଇଁ ଏହାରେ କରିବାକୁ

ਪਿਆਸ ਲੁਨ ਵਾਹਿ ਗੁਰ ਪਾਲ ਦ੍ਰਿਤ ਸਾਹਿਬ

ବିଜୁଲ୍ୟାତେପିମନାପିତାମିତା

ଭରନ୍ତରାଜୀମିଶ୍ରବନ୍ଦି

दुर्लभमेहमानाभृत्यरात्रीप्रभलेपाम्

ਚਿਨ੍ਹਿਸਤਾਤੇ ਉਹ ਸ਼ਾਹੀ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਮੁਹੱਲਾਂ

ପ୍ରମାଣିତ ହେଲା କିମ୍ବା ଏହାରେ କିମ୍ବା

द्वादशमासिन्हग्रहमुद्यत्यनुलम्ब

रन्त्रीमानितउच्छव्युपादान

ଶିଖମନ୍ଦରେ ପାତାରେ ପାତାରେ

दामरु अमावस्या दिनी उत्तीर्ण दूर राजस्थान
-dal, Dhule and -

than Mandar and the Kashwar

प्रादीपिकामरात्सुलभुवेष्यता।

मुख्यमन्त्रियान्तर्मुलमध्यदाल

Joint Prosthetic Implants

મારુદ્વાદીનાથાનાથાનાથાનાથાનાથાનાથ

धर्माद्यतिरिक्तमधारान्तराधर्मका

અનુભૂતિ

असुलुम्हर्मितिर्वान्नेचज्ञेपग्भ

आपसमाजीयता विभाग

~~तात्पुरा विद्या विद्या विद्या~~

१०००

— ४५ —

मात्रपद्माद्युत्तमान्तरिक्षम्

ચાર્ચાનાંદ

ମହାପାତ୍ରାଧୁଷ୍ଟଲଉଚ୍ଛପାତ୍ରମହା

શ્રીમતી માનેલી રેણુકા

ରୂପକାମନାରେ ଅଧିକାରୀ ହୁଏ ତଥା କାମକାଳୀ

ଯାହାର କାହାର ପାଦରେ ତାହାର ପାଦରେ

महामहिना वायनादिप्रभृते श्री
महाराजामातृप्रियं विष्णुवान्
द्विष्टप्रेष्ठेषां उत्तिराज्ञानसारेष्व
चराप्रभृत्यन्तमात्मायामहिना
त्वं प्रियं विष्णुवान्मातृप्रभृत्यन्तम्
चाप्रेष्ठेषां विष्णुवान्प्रेष्ठेषां

१२
राजावाडे शेष
कार्त्तिक चतुर्दशी विहारी
विहारी विहारी विहारी विहारी
विहारी विहारी विहारी विहारी
विहारी विहारी विहारी विहारी
विहारी विहारी विहारी विहारी

१३

ପାତ୍ରକାରୀଙ୍କ ନିଷ୍ଠ୍ୟରେ ହାତରେ

— श्रीमद्भगवद्गीता अध्यात्मिका

—॥४॥
—॥५॥

स्वयम्भूतिर्गुणादेव

— श्रीमद्भगवद्गुरुप्रसादम् उल्लः

— शृंगारामर्त्तमयत्वेन

ପରମାତ୍ମାଙ୍କରିତା

— ମହାତ୍ମା ପଦମନାଭ

— རྒྱତ୍ୱ རྒྱତ୍ୱ རྒྱତ୍ୱ རྒྱତ୍ୱ རྒྱତ୍ୱ རྒྱତ୍ୱ རྒྱତ୍ୱ རྒྱତ୍ୱ

— सामर्त्याप्तरक्षयापृष्ठाद्य हार्य

— ପ୍ରମାଣିତ ଅଧିକାରୀଙ୍କ ଦେଖିଲା

—
—

an Mandal, Dhule and the

~~do not want to~~

Althusser

~~JOHN H. BROWN~~

11

— རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ

संग्रह ग्रन्थालय अधिकारी

— ཤྱବ୍ଦକର୍ମକାରୀ ଯୁଧ୍ୟାମଣି ।

ଶ୍ରୀମତୀ ପାତ୍ନୀ କୁମାରୀ

त्यग्नामवास्त्रमावृणु।

४ अमरपालगढ़ नगरामुख

स्त्रीमातृपत्न्याराधनमाति

—द्वादशम् अष्टमो षष्ठ्या रथस्त्रैरु

— उमेरमीउयादीरीजम्मयात्

३० नारायण शर्मा (१)

१८

प्रहर्तुणमत्यादिभुलभद्री
मताउभ्येनपेत्यथष्ट्यातोधी
प्रसन्नमध्याणेऽनव्याप्तावा
प्रद्युम्नादीतागेत्यभुलधिष्ठी
मताउपर्याप्ताभुली

ପ୍ରତାପଶ୍ରୀମଦ୍ବିଜନାମିତିକାଳ
ପ୍ରତାପଶ୍ରୀମଦ୍ବିଜନାମିତିକାଳ

राजमन्त्रार्थिणातपेक्षतमीमां
चरक्तराज्ञयन्त्रित्वा दुरुमस्त
नवापावहार गृभवप्रथेत्याच

१ उत्तरायणसंवत्सरे
२ चम्पुपदेशग्रहप्रांतम्
शानक्त्यावेद्युग्माम
पापलोकायाधीउपाया
कामिनयुपर्युक्तिगम
अनितावेद्युग्मामुद्दिः
रक्षाघोषोघोषल
३ प्रांतायुग्मामित्यन्तराम

रुद्रमिति गाहन्त्रज्ञेयम्
स्त्रीग्राम्याभिरैत्यप्तवाच्यम्
विग्रहाभिन्नतां च इत्यन्वा
मृतप्रस्थापयेत्तोषेष्व



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com